

मुरमुरे की जीत

सामान्यतः धान से बनाया जाने वाला मुरमुरा गाँव में भी अपनी पहचान खोता जा रहा है क्योंकि इसमें वो आकर्षण नहीं दिखता जो कुरकुरे और पोप्स में है, बांस से बनी टोकनी में मुरमुरे बेचती डीमरिन [मुरे बेचने वाली महिला] की आवाज आज सुनाई नहीं देती, अब मशीन से बने मुरमुरे किराने की दुकान में मिलते हैं । बच्चे आज मुरमुरे को खाना पसंद नहीं करते क्योंकि इसमें वो टेस्ट नहीं है जो चिप्स और कुरकुरे में है । परियोजना क्षेत्र में इस पर काफी बात की गयी और कुपोषण को खत्म करने के विविध उपायों पर लोगों से चर्चा हुई, कई चरणों में चली चर्चा का विषय था कि बच्चों को क्या खिलाया जाये की उनका वजन बढ़ सके जो ज्यादा मंहगा भी ना हो और बनाने में आसानी भी हो, अंततः प्रयोग किया गया । मुरे, चना [भुना हुआ] और गुड की मिला कर लड्डू बनाये गए और बच्चों को खिलाया भी गया, बच्चों ने मजे से खाया । इस तरह एक उपाय सामने आया जिसे बच्चों को खिलाया जा सकता है जो पौष्टिक भी है । परियोजना स्टाफ ने कुछ घरों का चयन किया जिनके बच्चे कुपोषण के शिकार थे, माता पिता के साथ कई बार बात की गयी और उन्हें तैयार किया की वे बच्चों को मुरमुरे और चना गुड के लड्डू खिलाये । इस तरह राधेश्याम, राधिका, अंजलि और नीलम के घर में लड्डू बने और इन परिवारों ने बच्चों को लड्डू खिलाना प्रारंभ किया । इसका प्रभाव धीरे धीरे दिखने लगा बच्चों ने इन लड्डुओं को पसंद किया और उनका वजन भी बढ़ा, परिवार भी खुश है कि उनका बच्चा कुछ ठीक हो रहा है ।



इन सभी परिवारों ने अपने बच्चे को कम से कम 25 दिन तक रोज एक लड्डू खाने को दिया साथ ही घर का खाना और आंगनवाड़ी में भी पोषण आहार मिलता रहा, लड्डू बनाना आसान और सस्ता भी है 20 से 25 दिन के लिए रोज 1 लड्डू के लिए सिर्फ 55 रुपये खर्च करने पड़े, 1 पाव मुरमुरा, 1 पाँव चना और 1 पाँव गुड से 25 दिन के लिए लगभग 30 ग्राम का एक लड्डू बनाया जा सकता है ।

नाम	आयु	वजन	वजन
राधेश्याम	4 वर्ष	11 कि. 400 ग्रा. [14/02/2014]	12 कि. [23/05/2014]
राधिका	1 वर्ष 11 माह	5 कि.900 ग्रा. [14/02/2014]	6 कि. 300 ग्राम [23/05/2014]

परिवार का कहना है की पिछले तीन चार माह से बच्चे अच्छे हैं और खाना भी अच्छे से खा रहे हैं ।